

अण्डमान निकोबार द्वीप समाचार



रजि.न.34300/80 संख्या 306 श्री विजयपुरम, सोमवार, 16 नवम्बर 2026 web: dt.andamannicobar.gov.in 2.00 रूपए

जनजाति समुदाय के उत्थान के लिए स्थानीय कौशल व पारम्परिक विरासत को मिलेगा प्रोत्साहन : डॉ. दिनेश शर्मा

जनजाति समुदाय को देश के विकास की मुख्यधारा से जोडने के प्रयास होंगे तेज

भगवान बिरसा मुंडा सही मायने में थे जननायक

विशेष परिस्थिति में उपचार के लिए मिलेगी हेलीकॉप्टर सुविधा

जनजाति समुदाय प्रकृति का सबसे बड़ा पालक









श्री विजयपुरम, 15 नवंबर।

डॉ. भीमराव अंबेडकर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, पहाड़गाँव, श्री विजयपुरम के ऑडिटोरीअम में धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा जी की 151वीं जयंती एवं जनजातीय गौरव दिवस के अवसर पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के मुख्य आतिथ्य में आयोजित राष्ट्रीय कार्यक्रम में अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के माननीय उप राज्यपाल डॉ. दिनेश शर्मा जी वर्चुअल माध्यम से सम्मिलित हुए।

कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान बिरसा मुंडा जी को पुष्प अर्पित कर एवं दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर माननीय उप राज्यपाल जी ने जनजातीय प्रदर्शनी का शुभारंभ किया, जिसमें जनजातीय समुदाय की समृद्ध कला, संस्कृति, हस्तशिल्प एवं जीवनशैली की झलक देखने को मिली।

माननीय उप राज्यपाल ने कहा कि जनजाति समुदाय के उत्थान के लिए स्थानीय कौशल एवं पारम्परिक विरासत को प्रोत्साहन दिया जाएगा। उन्हें देश के विकास की मुख्यधारा से जोड़ने के प्रयास तेज किए जाएंगे। जनजाति समुदाय ने हर घर तिरंगा अभियान में जिस प्रकार से जोर–शोर से भागीदारी की थी वह राष्ट्र के प्रति समर्पण का परिचायक है। भगवान बिरसा मुंडा की जयंती पर उन्हें नमन करते हुए कहा कि उन्होंने देश की आज़ादी के लिए अंग्रेज़ों से लडाई की थी। 15 वर्ष की आयु में उन्होंने अंग्रेज़ों के खिलाफ युद्ध छेड़ा था तथा सही मायने में वे जन नायक थे। सरकार ने जनजाति समुदाय से आने वाले लोगों के लिए जनजाति जनधन केन्द्र को मंजूरी दी गई है। अण्डमान के निकोबार में जनजाति समुदाय के लोगों के लिए विशेष परिस्थिति में उपचार के लिए हेलीकॉप्टर की सुविधा उपलब्ध कराएगी, जिसमे मरीज़ एवं सहायक का खर्च सरकार ही वहन करेगी। जनजाति समुदाय की अन्य मांगों पर भी विचार हो रहा है।

माननीय उप राज्यपाल ने कहा कि सरकार मानती है कि जनजाति समुदाय प्रकृति का सबसे बडा संरक्षक और पालक है। उनके अधिकारों का हनन नहीं होने दिया जाएगा। इनका जीवन जल जंगल और जानवर के बीच के संतुलन को स्थापित करता है। प्रकृति और इनके जीवन के बीच में अनूठा तालमेल है। सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के साथ देश के विकास में उनकी भागीदारी को बढाया जाएगा। जनजाति समूह के सामाजिक और आर्थिक कल्याण के प्रति सरकार संवेदनशील है। उनके अधिकारों का संरक्षण प्राथमिकता में सर्वोपरि है। जनजाति समूह भी अपनी सास्कृतिक विरासत को सहेजने के प्रति गंभीर है। इस समुदाय के कल्याण के लिए माननीय प्रधानमंत्री ने तमाम योजनाए चलाई हैं। पीएम जनमन जैसी योजनाएं मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति कर रही हैं।

शेष पृष्ठ 4 पर

छठ महापर्व भारतीय संस्कृति, प्रकृति के प्रति सम्मान, त्याग, तपस्या और सामाजिक समरसता का अनुपम प्रतीक : डॉ. दिनेश शर्मा

द्वीपसमूह में पहली बार छठ महापर्व पर सार्वजनिक अवकाश घोषित, माननीय उप राज्यपाल ने श्रद्धालुओं को दी शुभकामनाएं







श्री विजयपुरम 15 नवंबर।

अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के माननीय उप राज्यपाल, पूर्व राज्यसभा सांसद एवं यूपी के पूर्व उप मुख्यमंत्री डॉ. दिनेश शर्मा जी ने आज छठ महापर्व के पावन अवसर पर आयोजित छठ मेला कार्यक्रम में सम्मिलित होकर भगवान सूर्य एवं छठी मैया की आराधना की तथा उपस्थित श्रद्धालुओं को महापर्व की हार्दिक शुभकामनाएं दीं।

अपने संबोधन में माननीय उप राज्यपाल ने कहा कि छठ महापर्व केवल पूजा का पर्व नहीं, बल्कि श्रद्धा, पवित्रता और अनुशासन का अद्भुत संगम है। यह पर्व हमें प्रकृति के प्रति सम्मान, जीवन के प्रति कृतज्ञता और समाज के कल्याण की भावना का संदेश देता है। भगवान सूर्य को उदय और अस्त, दोनों अवस्थाओं में अर्घ्य अर्पित करने की परंपरा जीवन के शाश्वत सत्य को दर्शाती है कि जिसका उदय हुआ है, उसका अस्त होना भी निश्चित है। उन्होंने कहा कि छठ महापर्व में माताएं एवं बहनें चार दिनों तक अत्यंत कठिन व्रत और कठोर अनुशासन का

शेष पृष्ठ 4 पर

संदेश



'राष्ट्रीय प्रेस दिवस, 2026' के अवसर पर अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के समस्त पत्रकारों, संपादकों, संवाददाताओं, छायाकारों तथा मीडिया जगत के सभी लोगों को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

इस वर्ष भारतीय प्रेस परिषद द्वारा निर्धारित विषय ''पत्रकारिताः लोकलुभावन या उत्तरदायी'' वर्तमान समय में पत्रकारिता की भूमिका एवं दायित्वों पर विचार करने का महत्त्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है। स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं उत्तरदायी पत्रकारिता किसी भी सशक्त लोकतंत्र की आधारशिला है। वर्तमान डिजिटल युग में सूचनाओं का प्रसार अत्यंत तीव्र गति से हो रहा है। ऐसे में समाचारों की सत्यता सुनिश्चित करना, भ्रामक सूचनाओं से बचना तथा सामाजिक सौहार्द, राष्ट्रीय एकता और संवैधानिक मूल्यों को बनाए रखना मीडिया की महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व है।

मैं अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के स्थानीय प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक एवं डिजिटल मीडिया से जुड़े पत्रकारों को द्वीपों की जनसमस्याओं, विकास संबंधी आवश्यकताओं और आम नागरिकों की अपेक्षाओं को प्रभावी ढंग से उजागर करने में उनके योगदान के लिए सराहना करता हूँ। इस राष्ट्रीय प्रेस दिवस पर मैं सभी पत्रकारों से सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता, स्वतंत्रता एवं जनहित के उच्च आदर्शों को बनाए रखने का आह्वान करता हूँ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि मीडिया राष्ट्र निर्माण एवं अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के सर्वांगीण विकास में अपनी सकारात्मक व रचनात्मक भूमिका निरंतर निभाता रहेगा।

(डॉ. दिनेश शर्मा)
माननीय उप–राज्यपाल
अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह

माननीय उप राज्यपाल ने सरस आजीविका मेला 2026 का किया उद्घाटन

स्वयं सहायता समूहों एवं ग्रामीण उद्यमियों को मिला विपणन का मंच

आत्मनिर्भरता एवं सतत आजीविका को बढ़ावा देने हेतु सरस मेले का शुभारंभ



दिल्ली प्रवास से श्री विजयपुरम लौटने के उपरांत अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के माननीय उप राज्यपाल डॉ. दिनेश शर्मा जी ने मुख्य सचिव श्री ज्ञानेश भारती, पुलिस महानिदेशक श्री रवीन्द्र सिंह यादव तथा उप राज्यपाल के सचिव श्री नीरज भारती के साथ द्वीपों में चल रहे विभिन्न विकास कार्यों एवं प्रशासनिक गतिविधियों की समीक्षा की। इस अवसर पर उन्होंने चल रही परियोजनाओं की प्रगति का संज्ञान लिया।

माननीय उप राज्यपाल ने छठ पूजा के दौरान कानून–व्यवस्था बनाए रखने तथा पूजा के सुचारू एवं शांतिपूर्ण आयोजन को सुनिश्चित करने हेतु भी अधिकारियों को विस्तृत निर्देश दिए। पुलिस, प्रशासनिक एवं स्थानीय निकायों के बीच समन्वय सुनिश्चित करते हुए श्रद्धालुओं को सुरक्षित, सुविधाजनक एवं व्यवस्थित वातावरण उपलब्ध कराया जाए।







श्री विजयपुरम, 15 नवंबर।

अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के माननीय उप राज्यपाल डॉ. दिनेश शर्मा जी ने ग्रामीण विकास, पंचायती राज संस्था एवं स्थानीय निकाय निदेशालय, अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन द्वारा प्रदर्शनी मैदान, श्री विजयपुरम में आयोजित सरस आजीविका मेला 2026 का उद्घाटन किया। इस अवसर पर अतिथि सम्मान के रूप में माननीय सांसद श्री बिष्णु पद राय जी उपस्थित रहे।

शेष पृष्ठ 4 पर

लोक निवास में जनता दर्शन कार्यक्रम 30 नवंबर को

श्री विजयपुरम, 15 नवंबर।

अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के माननीय उप राज्यपाल के निर्देशानुसार, आगामी 30 नवंबर, 2026 को लोक निवास में जनता दर्शन कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इस कार्यक्रम में अपनी शिकायतों एवं अनुरोधों के साथ शामिल होने के इच्छुक सभी व्यक्तियों से राज्य पोर्टल तथा दक्षिण अण्डमान ज़िला प्रशासन की वेबसाइट पर उपलब्ध लिंक के माध्यम से अपना पंजीकरण कराने का अनुरोध किया गया है। इसके अतिरिक्त, इच्छुक व्यक्ति अपने अनुरोध लेकर शाम 3 बजे से शाम 4 बजे के बीच उपायुक्त (दक्षिण अण्डमान) कार्यालय के कक्ष में व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर भी जनता दर्शन कार्यक्रम के लिए पंजीकरण करा सकते हैं। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार इस कार्यक्रम में वरिष्ठ नागरिकों एवं दिव्यांगजनों को प्राथमिकता दी जाएगी। मुलाकात का समय पहले आओ, पहले पाओ के आधार पर निर्धारित किया जाएगा। सभी इच्छुक व्यक्तियों से अनुरोध किया गया है कि वे अपने आवेदन अधिकतम 20 नवंबर, 2026 तक जमा कर दें। महत्वपूर्ण वेबसाइट लिंक राज्य पोर्टल https://andamannicobar.gov.in तथा दक्षिण अण्डमान ज़िला वेबसाइट https://southandaman.nic.in है।

माननीय उप राज्यपाल ने सरदार वल्लभभाई पटेल की 151वीं जयंती पर राष्ट्रीय एकता सम्मेलन में भाग लिया



श्री विजयपुरम, 15 नवंबर।

भारत रत्न सरदार वल्लभभाई पटेल की 151वीं जयंती के अवसर पर माननीय उप राज्यपाल डॉ. दिनेश शर्मा जी ने भारत–भारती, श्री विजयपुरम द्वारा टैगोर राजकीय

शेष पृष्ठ 4 पर

जनजाति समुदाय के उत्थान के लिए

——————————पृष्ठ 1 का शेष





माननीय उप राज्यपाल ने कहा कि जनजाति समुदाय के लोग अब सरकारी सेवाओं में भी नौकरी पा रहे हैं। आने वाले समय में उनकी भागीदारी और बढ़ेगी। उनके लिए शिक्षा आदि की बेहतर व्यवस्था भी की जा रही है। अभी भी इस समुदाय के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धियां शानदार है। निकोबारी उत्पादों जैसे चटाई आदि को जीआई टैग मिलने लगा है। इनकी पारम्परिक नौका आकर्षण का केन्द्र रही है और उनके जीवन के ऐतिहासिक पहलुओं को सामने लाती है।

इस अवसर पर माननीय उप राज्यपाल जी ने एक महत्वपूर्ण घोषणा करते हुए कहा कि जनजातीय मरीज़ों के साथ एक परिचारक को भी निःशुल्क हेलीकॉप्टर सेवा उपलब्ध कराई जाएगी। इस व्यवस्था से दूर–दराज़ के क्षेत्रों में रहने वाले जनजातीय परिवारों को इलाज के लिए आवागमन में बड़ी राहत मिलेगी और समय पर बेहतर स्वास्थ्य सुविधा सुनिश्चित होगी। जनजातीय बच्चों एवं समुदाय के सदस्यों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया। साथ ही जनजातीय समुदाय के लाभार्थियों को आयुष्मान भारत कार्ड वितरित किए गए, जिसके माध्यम से वे 5 लाख रुपये तक का निःशुल्क उपचार प्राप्त कर सकेंगे। कार्यक्रम में जनजातीय समुदायों द्वारा मनमोहक सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गईं, जिनमें उनकी परंपरा, लोक नृत्य एवं संगीत की जीवंत झलक देखने को मिली।

लोक निवास से प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार कार्यक्रम में माननीय केंद्रीय जनजातीय कार्य मंत्री श्री जुएल ओराम जी, महाराष्ट्र के माननीय मुख्यमंत्री श्री देवेंद्र फडणवीस जी वर्चुअल माध्यम से तथा माननीय सांसद श्री बिष्णु पद राय जी, मुख्य सचिव श्री ज्ञानेश भारती, वरिष्ठ अधिकारीगण एवं अन्य गणमान्यजन उपस्थित रहे।

छठ महापर्व भारतीय संस्कृति, प्रकृति के प्रति

——————————पृष्ठ 1 का शेष





पालन करती हैं। वे अपने परिवार, संतान, समाज और राष्ट्र की सुख–समृद्धि एवं कल्याण की कामना के साथ भगवान सूर्य और छठी मैया की उपासना करती हैं। यह पर्व त्याग, तपस्या, समर्पण और पारिवारिक मूल्यों का अनुपम उदाहरण है।

लोक निवास से प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार इस अवसर पर सांसद श्री विष्णु पद राय, मुख्य सचिव श्री ज्ञानेश भारती, उपायुक्त, दक्षिण अण्डमान श्रीमती पूर्वा गर्ग, पुलिस अधीक्षक, दक्षिण अण्डमान श्रीमती श्वेता के. सुगथन, वरिष्ठ राजनेता श्री जयप्रकाश जी, श्री अनिल तिवारी जी तथा विभिन्न विभागों के सचिवों एवं पुलिस प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति रही।

माननीय उप राज्यपाल ने सरस आजीविका मेला

——————————पृष्ठ 1 का शेष

समारोह का शुभारंभ मे माननीय उप राज्यपाल को निकोबारी समुदाय के सदस्यों द्वारा पारंपरिक ढंग से स्वागत किया। यह स्वागत द्वीपसमूह की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत एवं स्वदेशी परंपराओं का प्रतीक था। इस अवसर पर माननीय उप राज्यपाल को आदर एवं सौजन्य के रूप में एक पुस्तक भी भेंट की गई।

समारोह में 'वंदे मातरम' का गायन, तत्पश्चात राष्ट्रगान एवं गणमान्यजनों द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया, जिससे कार्यक्रम का औपचारिक शुभारंभ हुआ। इसके बाद माननीय उप राज्यपाल एवं अन्य गणमान्यजनों को आभार स्वरूप 'द्वीप सूत्र बॉक्स' भेंट किए गए।

सरस आजीविका मेला 2026 ग्रामीण महिला उद्यमियों, स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) एवं पारंपरिक कारीगरों को अपने उत्पादों का प्रदर्शन, प्रचार एवं विपणन करने हेतु एक संस्थागत मंच प्रदान करने की महत्वपूर्ण पहल है। इस पहल का उद्देश्य निचले स्तर पर उद्यमशीलता को मजबूत करना, बाज़ार तक व्यापक पहुंच सुनिश्चित करना, सतत आजीविका के अवसर सृजित करना तथा सामुदायिक उद्यम विकास के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण को बढ़ावा देना है।

अपने उद्घाटन भाषण में माननीय उप राज्यपाल ने समावेशी ग्रामीण विकास को गति देने में महिला–नेतृत्व वाली पहलों की महत्वपूर्ण भूमिका पर ज़ोर दिया। उन्होंने आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने, सामुदायिक संस्थाओं को मजबूत करने तथा स्वयं सहायता समूहों एवं ग्रासरूट उद्यमशीलता के माध्यम से सतत आजीविका के अवसरों का विस्तार करने के महत्व पर बल दिया।

यह मेला ग्रामीण उत्पादकों हेतु एक जीवंत बाज़ार के रूप में कार्य करता है, जहाँ स्वयं सहायता समूहों, महिला उद्यमियों एवं पारंपरिक कारीगरों को अपने उत्पादों का प्रदर्शन करने, अपनी कारीगरी प्रस्तुत करने तथा उपभोक्ताओं से सीधा संपर्क स्थापित करने का अवसर मिलता है। बिक्री को सुविधाजनक



बनाने के साथ–साथ इस पहल का उद्देश्य उत्पादों की दृश्यता बढ़ाना, स्वदेशी कौशल एवं कारीगरी को प्रोत्साहित करना, मूल्य संवर्धन को प्रोत्साहित करना और अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में आय सृजन के सतत अवसर तैयार करना है।

अपने संबोधन में माननीय सांसद श्री बिष्णु पद राय ने ग्रामीण उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करने तथा स्वयं सहायता समूहों हेतु आजीविका के अवसरों को मजबूत करने के महत्व पर बल दिया। उन्होंने कहा कि ग्रामीण समुदायों को उद्यम एवं बाज़ार–उन्मुख गतिविधियों के माध्यम से अपनी आर्थिक क्षमता का विकास करने हेतु सक्षम अवसर सृजित किए जाने चाहिए।

लोक निवास से प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार समारोह में मुख्य सचिव श्री ज्ञानेश भारती, भा.प्र.से., दक्षिण अण्डमान की उपायुक्त एवं सचिव (ग्रामीण विकास व पंचायत) सुश्री पूर्वा गर्ग, भा.प्र.से., अध्यक्षा, श्री विजयपुरम नगरपालिका परिषद श्रीमती वसंता, प्रमुख, प्रोथरापुर श्रीमती चंपा दास तथा प्रमुख, फरारगंज श्रीमती पद्मावती के अतिरिक्त अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी, ग्रामीण विकास, पंचायती राज संस्था एवं स्थानीय निकाय निदेशालय के पदाधिकारी, स्वयं सहायता समूहों के प्रतिनिधि एवं अन्य संबंधित हितधारक भी उपस्थित रहे।

द्वीप बीच गेम्स–2026 समाप्त

डिगलीपुर, 15 नवंबर।

ज़िला प्रशासन, डिगलीपुर, उत्तर अण्डमान द्वारा पर्यटन विभाग एवं ग्रामीण विकास विभाग के सहयोग से आयोजित दो दिवसीय द्वीप बीच गेम्स–2026 का आज डिगलीपुर के सुरम्य रामनगर समुद्र तट पर सफलतापूर्वक समापन हुआ। इस आयोजन में खिलाड़ियों एवं खेल प्रेमियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

14 एवं 15 नवंबर, 2026 को आयोजित इस खेल आयोजन में स्थानीय निवासियों, युवाओं, सरकारी कर्मचारियों तथा खेल प्रेमियों की उत्साहपूर्ण भागीदारी देखने को मिली। दो दिवसीय आयोजन के दौरान वॉलीबॉल, कबड्डी, रस्साकशी, 100 मीटर दौड़ तथा म्यूज़िकल चेयर (केवल महिलाओं के लिए) जैसी खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से प्रतिभागियों को अपनी खेल प्रतिभा, सामूहिक कार्यकुशलता एवं खेल भावना प्रदर्शित करने का अवसर मिला। समापन समारोह में डिगलीपुर की उप शिक्षा अधिकारी डॉ. सी. पुष्पवल्ली मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। इस अवसर पर सहायक आयुक्त, डिगलीपुर, रामनगर एवं सुभाषग्राम के प्रधान, विभिन्न विभागों के अधिकारी, प्रतिभागी खिलाड़ी तथा आम जनता भी मौजूद रहे। विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं के विजेताओं एवं उप विजेताओं को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए पुरस्कार एवं प्रमाण–पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार ज़िला प्रशासन, डिगलीपुर ने इस आयोजन को सफल बनाने में बहुमूल्य सहयोग देने के लिए उत्तर व मध्य अण्डमान चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री, पंचायती राज संस्थाओं, विभिन्न विभागों के अधिकारियों, स्वयंसेवकों, सभी प्रतिभागी खिलाड़ियों तथा सहयोगी एजेंसियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

राज्य रैपिड एवं ब्लिट्ज शतरंज प्रतियोगिता संपन्न

श्री विजयपुरम, 15 नवंबर।

अण्डमान निकोबार शतरंज संघ (एएनसीए) द्वारा आयोजित दो दिवसीय अण्डमान तथा निकोबार राज्य रैपिड एवं ब्लिट्ज शतरंज प्रतियोगिता–2026 का आज समापन हुआ। इस प्रतियोगिता में द्वीपसमूह के विभिन्न क्षेत्रों से आए शतरंज खिलाड़ियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और शानदार खेल प्रदर्शन किया।

आज आयोजित समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के माननीय सांसद श्री बिष्णु पद राय मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि ने विभिन्न श्रेणियों में विजेता एवं उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को ट्रॉफी एवं पदक प्रदान किए। वर्ष 2026 के दौरान अंतरराष्ट्रीय स्तर की शतरंज प्रतियोगिताओं में अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह का प्रतिनिधित्व करने वाले खिलाड़ियों को भी विशेष रूप से सम्मानित किया गया।

रैपिड शतरंज प्रतियोगिता–शीर्ष पांच खिलाड़ी

प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार नौ चक्रों के रोमांचक मुकाबलों के बाद रैपिड शतरंज प्रतियोगिता में शीर्ष पांच स्थान प्राप्त करने वाले खिलाड़ी इस प्रकार रहे :–विराट जे. एस.–8.5, आर्यमान तिवारी–8, ईशान एस.–8, अनुग्रह नायर–7, साव जिन्सन सैमुअल–7

ब्लिट्ज शतरंज प्रतियोगिता–शीर्ष पांच खिलाड़ी

ब्लिट्ज शतरंज प्रतियोगिता में शीर्ष पांच स्थान प्राप्त करने वाले खिलाड़ी इस प्रकार रहे :– विराट जे. एस.–8, अनुग्रह नायर–7.5, श्रेष्ठा विजय डी.–7.5, साव जिन्सन सैमुअल–7.5 आर्यमान तिवारी–7.5

माननीय उप राज्यपाल ने वनवासी कल्याण आश्रम में भगवान बिरसा मुंडा जी की 151वीं जयंती एवं जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम में शामिल हुए













श्री विजयपुरम, 15 नवंबर।

अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के माननीय उप राज्यपाल डॉ. दिनेश शर्मा जी ने वनवासी कल्याण आश्रम, श्री विजयपुरम में भगवान बिरसा मुंडा जी की 151वीं जयंती एवं जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम में भाग लिया।

इस अवसर पर वैदिक मंत्रोच्चार एवं पारंपरिक जनजातीय नृत्यों का अवलोकन किया तथा धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा जी के प्रेरणादायी जीवन, संघर्ष एवं राष्ट्र के प्रति उनके अतुलनीय योगदान पर उपस्थित जनसमूह को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि धरती आबा का जीवन त्याग, साहस, स्वाभिमान एवं जनजातीय अस्मिता की रक्षा का अमर प्रतीक है।

लोक निवास से प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार इस अवसर पर उपायुक्त, दक्षिण अण्डमान श्रीमती पूर्वा गर्ग, संयुक्त सचिव श्री अपूर्व शर्मा, श्री जय प्रकाश जी, श्री अनिल तिवारी जी, आश्रम के अध्यक्ष श्री राजेश पुरिया जी, गौसंवर्धन समिति के प्रतिनिधिमंडल एवं श्री विशाल जॉली जी उपस्थित रहे।

माननीय उप राज्यपाल ने सरदार वल्लभभाई पटेल की

——पृष्ठ 1 का शेष







शिक्षा महाविद्यालय (टीजीसीई) के सभागार में आयोजित 'राष्ट्रीय एकता सम्मेलन' में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित होकर लौहपुरुष सरदार पटेल के राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए दिए गए अतुलनीय योगदान को स्मरण किया। उनकी राष्ट्रनिष्ठा, दृढ़ संकल्प और दूरदर्शिता 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के निर्माण के लिए हमें सदैव प्रेरित करती रहेगी। लोक निवास से प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार इस अवसर पर माननीय सांसद श्री बिष्णु पद राय जी, पद्मश्री के. चेल्लामल जी, स्वामी शुद्धानंद सरस्वती जी महाराज, संस्था के अध्यक्ष श्री विनय पटराले जी एवं वरिष्ठ राजनेता श्री अनिल तिवारी जी सहित अन्य गणमान्यजन उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय प्रेस दिवस आज : मेगापोड नेस्ट में विशेष कार्यक्रम का आयोजन

श्री विजयपुरम, 15 नवंबर।

भारत में प्रतिवर्ष 16 नवंबर को राष्ट्रीय प्रेस दिवस मनाया जाता है। इस वर्ष 'राष्ट्रीय प्रेस दिवस' का मुख्य विषय 'पत्रकारिता : लोकलुभावन या उत्तरदायी' निर्धारित किया गया है। राष्ट्रीय प्रेस दिवस के अवसर पर सूचना, प्रचार एवं पर्यटन निदेशालय, अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन द्वारा 16 नवंबर, 2026 को सुबह 11.30 बजे मेगापोड नेस्ट, श्री विजयपुरम में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। इस कार्यक्रम में अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन के सूचना, प्रचार एवं पर्यटन सचिव श्री विनायक चमाड़िया, भा.प्र.से., मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। कार्यक्रम में द्वीपसमूह के विभिन्न मीडिया संस्थानों से जुड़े पत्रकार एवं मीडिया प्रतिनिधि भी भाग लेंगे। यह कार्यक्रम पत्रकारिता के मूल्यों, मीडिया की सामाजिक ज़िम्मेदारियों तथा लोकतांत्रिक व्यवस्था में स्वतंत्र एवं उत्तरदायी पत्रकारिता की महत्वपूर्ण भूमिका पर विचार–विमर्श करने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करेगा।

होमस्टे संचालन एवं सतत पर्यटन प्रबंधन पर प्रशिक्षण पूरा हुआ

श्री विजयपुरम, 15 नवंबर।

पर्यटन निदेशालय, अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन द्वारा होटल प्रबंधन, खानपान प्रौद्योगिकी एवं अनुप्रयुक्त पोषण संस्थान (आईएचएम), मुंबई के सहयोग से सूक्ष्म, लघु एवं मझौले उद्यमों के प्रदर्शन को बढ़ावा देने एवं गति प्रदान करने संबंधी (आरएएमपी) योजना के अंतर्गत आयोजित छह दिवसीय व्यापक प्रशिक्षण एवं प्रमाणन कार्यक्रम का समापन 14 नवंबर को आपदा प्रबंधन निदेशालय के प्रशिक्षण हॉल में आयोजित समापन सत्र के साथ हुआ। 9 से 14 नवंबर, 2026 तक आयोजित इस कार्यक्रम का विषय 'होमस्टे संचालन–कक्ष प्रभाग एवं सतत पर्यटन प्रबंधन' था।

सुश्री चंद्रकला बिस्वास द्वारा संचालित इस कार्यक्रम का उद्देश्य स्थानीय होमस्टे संचालकों एवं पर्यटन क्षेत्र से जुड़े हितधारकों की संचालन संबंधी, प्रबंधकीय एवं उद्यमशीलता क्षमताओं को सुदृढ़ करना, आतिथ्य सेवाओं के स्तर को बेहतर बनाना तथा द्वीपसमूह में ज़िम्मेदार पर्यटन को बढ़ावा देना था। छह दिवसीय कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों ने आतिथ्य सेवाओं एवं कक्ष प्रभाग के बुनियादी संचालन से संबंधित व्यावहारिक सत्रों और वास्तविक परिस्थितियों पर आधारित गतिविधियों में भाग लिया। प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में अतिथि सेवा के मूल सिद्धांत, स्वागत कक्ष की प्रक्रियाएं, आरक्षण प्रबंधन, गृह व्यवस्था के मानक, कमरों की तैयारी एवं निरीक्षण जैसे विषय शामिल थे। इसमें विशेष रूप से स्वच्छता, साफ–सफाई, बिस्तर की चादरों एवं अन्य वस्त्रों की देखभाल, कीट नियंत्रण तथा उष्णकटिबंधीय द्वीपीय परिस्थितियों के अनुरूप अतिथियों की सुरक्षा के उच्च मानकों को बनाए रखने पर ज़ोर दिया गया।

प्रशिक्षण का एक प्रमुख केंद्र सतत एवं ज़िम्मेदार पर्यटन प्रबंधन रहा। इसके तहत संचालकों को पर्यावरण अनुकूल कार्यप्रणालियों जैसे जल एवं ऊर्जा संरक्षण, कचरे का पृथक्करण, एकल उपयोग प्लास्टिक का उन्मूलन तथा पर्यावरण के लिए सुरक्षित सफाई उत्पादों के उपयोग के बारे में जानकारी दी गई। प्रतिभागियों को द्वीपसमूह की प्रवाल भित्तियों, मैंग्रोव वनों एवं तटीय जैव विविधता की पारिस्थितिक संवेदनशीलता के प्रति भी जागरूक किया गया। साथ ही, संरक्षण एवं ज़िम्मेदार यात्रा व्यवहार के प्रति पर्यटकों को जागरूक करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला गया।

सूचना, प्रचार एवं पर्यटन निदेशालय से प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार स्वतंत्र व्यावसायिक विकास को बढ़ावा देने तथा तीसरे पक्ष की ऑनलाइन यात्रा एजेंसियों (ओटीए) पर निर्भरता कम



करने के उद्देश्य से प्रशिक्षण सत्रों में डिजिटल विपणन एवं ब्रांड विकास पर भी विशेष ज़ोर दिया गया। होमस्टे संचालकों को अपनी अलग पहचान बनाने, स्थानीय व्यंजनों एवं संस्कृति को प्रदर्शित करने वाले अनुभव आधारित पर्यटन पैकेज तैयार करने तथा आकर्षक फोटोग्राफी एवं संक्षिप्त वीडियो के माध्यम से इंस्टाग्राम और अन्य सोशल मीडिया मंचों पर अपनी ऑनलाइन उपस्थिति बढ़ाने का प्रशिक्षण दिया गया।

इसके अतिरिक्त, अतिथियों की पूछताछ का प्रबंधन करने, संभावित ग्राहकों को वास्तविक बुकिंग में बदलने की दर बढ़ाने तथा प्रभावी संवाद एवं शिकायतों के समाधान के माध्यम से व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप आतिथ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए व्यावहारिक मार्गदर्शन भी दिया गया।

प्रदर्शनी मैदान में सरस आजीविका मेला–2026 का शुभारंभ

श्री विजयपुरम, 15 नवंबर।

ग्रामीण विकास विभाग द्वारा आयोजित सरस आजीविका मेला–2026 का आज प्रदर्शनी मैदान में शुभारंभ हुआ। इस मेले का उद्देश्य स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) को अपने उत्पादों का प्रदर्शन एवं विपणन करने के लिए एक मंच उपलब्ध कराना तथा ग्रामीण आजीविका को बढ़ावा देना है। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार मेले के अंतर्गत 18 नवंबर को पुष्प प्रदर्शनी तथा 26 नवंबर को शिशु प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा।

सूचना, प्रचार और पर्यटन निदेशालय द्वारा प्रकाशित तथा प्रबन्धक, राजकीय मुद्रणालय द्वारा मुद्रित, वितरण तथा विज्ञापन के लिए फोन–229465, प्रधान सम्पादक (प्रभारी) पी. कैरल डी. सोणी
e-mail:dweepsamachar@gmail.com

केंद्रीय मंत्री 15 से 16 नवंबर को मिस्र का दौरा करेंगे

नई दिल्ली, 15 नवम्बर।

केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल 15 से 16 नवंबर 2026 तक अरब गणराज्य मिस्र की आधिकारिक यात्रा करेंगे। इस यात्रा का उद्देश्य भारत और मिस्र के बीच दीर्घकालिक साझेदारी को और मजबूत करना है। इसमें द्विपक्षीय व्यापार का विस्तार करने, निवेश को बढ़ावा देने, औद्योगिक सहयोग बढ़ाने और व्यवसायों के बीच आपसी जुड़ाव को मजबूत करने पर विशेष बल दिया जाएगा।

भारत और मिस्र के बीच ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और लोगों के स्तर पर लंबे समय से प्रगाढ़ संबंध रहे हैं। ये संबंध अब बहुआयामी साझेदारी में बदल गए हैं, जिसमें राजनीतिक, आर्थिक, सुरक्षा और सांस्कृतिक सहयोग शामिल है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत–मिस्र संबंधों को नई गति मिली है। इसके परिणामस्वरूप, दोनों देशों के बीच संबंध अब 'रणनीतिक साझेदारी' के स्तर पर पहुंच गए हैं, जिसमें आर्थिक क्षेत्र सहित विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने की साझा प्रतिबद्धता है।

इस यात्रा के दौरान 'भारत–मिस्र संयुक्त व्यापार समिति' (जेटीसी) का 7वां सत्र, 'भारत–मिस्र संयुक्त व्यापार परिषद' (जेबीसी) की बैठक और 'भारत–मिस्र बिजनेस फोरम' का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम में मिस्र के वरिष्ठ मंत्रियों के साथ द्विपक्षीय बैठकें, प्रमुख कारोबारी प्रतिनिधियों के साथ बातचीत, और 'अफ्रीकन एक्सपोर्ट–इंपोर्ट बैंक', 'इजिप्शियन जूनियर बिजनेसमैन एसोसिएशन' तथा 'मिस्र–भारत स्टार्टअप फोरम' के साथ बैठकें भी शामिल होंगी। इन मुलाकातों से द्विपक्षीय व्यापार, निवेश, औद्योगिक सहयोग और नवाचार से



जुड़े संबंधों को नई गति मिलने की आशा है।

भारत–मिस्र संयुक्त व्यापार समिति (जेटीसी) का 7वां सत्र 15 नवंबर 2026 को काहिरा में आयोजित होगा। इसकी अध्यक्षता भारत के पीयूष गोयल और मिस्र के निवेश और विदेश व्यापार मंत्री डॉ. मोहम्मद फरीद सालेह करेंगे।

जेटीसी को अब मंत्री–स्तरीय दर्जा दिया गया है, जो यह दर्शाता है कि दोनों देश अपनी आर्थिक और व्यावसायिक साझेदारी को मजबूत करने को कितना महत्व देते हैं। इस बैठक में द्विपक्षीय व्यापार और निवेश संबंधों की प्रगति की समीक्षा की जाएगी। इसके साथ ही, द्विपक्षीय व्यापार के दायरे को और अधिक विविधतापूर्ण बनाने और उसका विस्तार करने के उपायों पर चर्चा होगी।

चर्चा में बाजार तक पहुंच, गैर–शुल्क बाधाएं, व्यापार उपाय, कृषि और खाद्य उत्पाद, फार्मास्यूटिकल्स और स्वास्थ्य सेवा, इंजीनियरिंग सामान, रसायन और पेट्रोकेमिकल्स, उर्वरक, कपड़ा, एमएसएमई, सीमा शुल्क सहयोग, सेवाएं, नवीकरणीय ऊर्जा, ग्रीन हाइड्रोजन, परिवहन और लॉजिस्टिक्स जैसे आपसी हित के कई अन्य विषय शामिल होंगे।

प्रेस की आजादी और नैतिक पत्रकारिता का प्रतीक है राष्ट्रीय प्रेस दिवस

नई दिल्ली, 15 नवम्बर।

स्वतंत्र और निष्पक्ष प्रेस एक सशक्त लोकतंत्र के चार स्तंभों में से एक है। भारत में स्वतंत्र और निष्पक्ष प्रेस के महत्व को उजागर करने के लिए हर साल 16 नवंबर को राष्ट्रीय प्रेस दिवस मनाया जाता है। प्रेस दिवस भारत को एक लोकतांत्रिक देश बनाने में इसके योगदान को सम्मानित करने के लिए भी मनाया जाता है।

राष्ट्रीय प्रेस दिवस भारतीय प्रेस परिषद अधिनियम, 1965 के तहत 1966 में भारतीय प्रेस परिषद की स्थापना का प्रतीक है। 1965 के अधिनियम को बाद में 1975 में निरस्त कर दिया गया और इसके बाद एक नया अधिनियम लागू किया गया। इसके बाद भारतीय प्रेस परिषद का 1979 में पुनर्गठन किया गया। एक स्वतंत्र निकाय के रूप में स्थापित प्रेस परिषद की प्राथमिक भूमिका यह सुनिश्चित करना है कि प्रेस बाहरी प्रभावों से मुक्त रहते हुए पत्रकारिता के उच्च मानकों को बनाए रखे। परिषद का विचार सबसे पहले 1956 में प्रथम प्रेस आयोग द्वारा प्रस्तावित किया गया था, जिसने प्रेस की स्वतंत्रता की रक्षा करने और नैतिक रिपोर्टिंग को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर जोर दिया था। यह दिन एक स्वतंत्र और जिम्मेदार प्रेस का प्रतीक है, जो लोकतंत्र के लिए केंद्रीय है। यह विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से मनाया जाता है, जिनमें पत्रकारिता में उत्कृष्टता के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार और एक स्मारिका का विमोचन शामिल है। राष्ट्रीय प्रेस दिवस के उपलक्ष्य में भारतीय प्रेस परिषद भारतीय प्रेस के सामने आने वाले विभिन्न मुद्दों को उठाने और नागरिकों को विभिन्न विषयों पर शिक्षित करने के लिए कई सेमिनार और कार्यशालाओं का आयोजन करती है। सूचना का अधिकार (आरटीआई) अधिनियम, विभिन्न प्रकार के संकटों का सामना करते समय मीडिया की भूमिका और दृष्टिकोण, नागरिकों को अपने मौलिक कर्तव्यों के प्रति जागरूक करने के लिए भारतीय प्रेस का कर्तव्य और संकट के समय नागरिकों को उचित उपाय बताने जैसे विषयों पर सेमिनार और कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है।

भारत का मीडिया प्रशासन ढांचा संस्थाओं, कानूनों और पहलों का एक मजबूत समूह है, जिसे प्रेस की स्वतंत्रता की रक्षा करने, नैतिक पत्रकारिता को मजबूत करने, नियामक प्रक्रियाओं का आधुनिकीकरण करने और मीडिया पेशेवरों का समर्थन करने के लिए डिजाइन किया गया है।

भारतीय प्रेस परिषद और भारत के प्रेस रजिस्ट्रार जनरल जैसे वैधानिक निकायों से लेकर पीआरपी अधिनियम, 2023 और डिजिटल प्रेस सेवा पोर्टल जैसे ऐतिहासिक सुधारों तक, समर्पित प्रशिक्षण संस्थानों और कल्याणकारी योजनाओं के साथ यह इको सिस्टम सामूहिक रूप से देश के मीडिया क्षेत्र की अखंडता, जवाबदेही और विकास को बनाए रखता है।

प्रेस ने जनमत को आकार देने और भारत के स्वतंत्रता संग्राम में लोगों की ऊर्जा को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। स्वतंत्रता संग्राम में प्रिंट मीडिया की भूमिका और लोकतंत्र को मजबूत करने में इसकी निरंतर भागीदारी की क्षमता के बारे में जागरूक होकर, स्वतंत्र भारत की सरकार ने 1956 में प्रथम प्रेस आयोग की स्थापना की। आयोग को भारत में प्रेस की स्थिति की जांच करने और लंबी अवधि में इसके सर्वांगीण विकास के लिए सिफारिशें करने का दायित्व सौंपा गया था।

खूबसूरती के मामले में गोवा के पालोलेम बीच ने सबको पछाड़ा, दुनिया की टॉप लिस्ट में आया नाम

नई दिल्ली, 15 नवम्बर।

हम जब भी कभी बीच पर घूमने की बात करते हैं, तो सबसे पहले गोवा जुबान पर आता है। समुद्र की लहरें, स्विम सूट और यारों का संग, कुछ ऐसा ही सपना हम सभी देखते हैं। हां, वो बात अलग है कि हर किसी का गोवा जाने का प्लान सक्सेसफुल भी नहीं हो पाता। पर गोवा की इसी खूबसूरती को आज दुनिया भी देख रही है, क्योंकि हाल ही में गोवा के पालोलेम बीच को वर्ल्ड में पहचान मिली है।

हाल ही में गोवा के दक्षिण जिले में स्थित पालोलेम समुद्र तट को 'बीच डॉट कॉम' के ग्लोबल इंडेक्स 2026 में एशिया के सबसे बेस्ट समुद्र तटों में जगह मिली है। बता दें कि इस बीच को दुनिया के 25 सबसे बेस्ट समुद्र तटों में छठे नंबर पर रखा गया है। इसमें सबसे खास बात कि यह एशिया का अकेला ऐसा बीच है जिसे इस लिस्ट में शामिल किया गया है।

पालोलेम समुद्र तट को एक्स्पर्ट्स की सिफारिशों, पर्यटकों के रिव्यूज, पानी के रंग, उसकी साफ–सफाई, बेहतर सुविधाओं और नासा के के आंकड़ों के साथ कुल 18 मानकों के आधार पर यह स्थान मिला है। इसमें सेंट जॉन, यूएस वर्जिन आइलैंड्स पर स्थित 'ट्रंक बे' पहले नंबर है, तो वहीं दूसरा स्थान ग्रीस के चानिया, क्रीट द्वीप पर स्थित एलाफोनिसी बीच को दिया गया है।

अगर आप गोवा के पालोलेम बीच पर घूमने का प्लान



कर रहे हैं, तो इन चीजों एक्सप्लोर करे बिना आपकी ट्रिप अधूरी है:

पालोलेम बीच पर वॉटर एडवेंचर एक बेहतरीन अनुभव हो सकता है। इसके लिए अपनी विश लिस्ट में कयाकिंग, डॉल्फिन साइटिंग, फिशिंग, बोट राइड और पैडलबोर्डिंग को जरूर शामिल करें।

इस बीच पर साइलेंट नॉइज डिस्को पार्टी बहुत फेमस है, अगर आप शोर–शराबे के बजाय शांति से डांस करने के शौकीन हैं, तो इसका मजा जरूर लें।

बीच पर सूरज को उगते और डूबते हुए देखना जन्नत जैसी फील देता है। मन को शांत करने और अपने अंदर की आवाज सुनने के लिए इससे परफेक्ट टाइम नहीं हो सकता। घूमने–फिरने के अलावा यहां कई वेलनेस सेंटर्स भी हैं, जहां आप सपा और मसाज ट्रीटमेंट ले सकते हैं।

रक्षा मंत्री ने कहा, स्वदेशी रक्षा क्षमताओं से मजबूत और आत्मनिर्भर बन रहा है भारत

नई दिल्ली, 15 नवम्बर।

रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने आज कहा कि देश में स्वदेशी क्षमताओं का तेजी से विकास भारत को मजबूत और आत्मनिर्भर रक्षा भविष्य की ओर ले जा रहा है। इन क्षमताओं में मिसाइल विकास, नौसैनिक प्लेटफॉर्म, एयरोस्पेस इंजीनियरिंग, रडार प्रणाली और अंतरिक्ष अनुप्रयोग शामिल हैं। श्री सिंह तेलंगाना के हैदराबाद में गैर–विनाशकारी मूल्यांकन और सहायक प्रौद्योगिकियों पर 36वें वार्षिक सम्मेलन तथा एयरोस्पेस क्षेत्र में गैर–विनाशकारी परीक्षण पर 15वें अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी को वर्चुअल माध्यम से संबोधित कर रहे थे। गुणवत्ता पर जोर देते हुए रक्षा मंत्री ने कहा कि किसी भी देश की प्रगति केवल उसके द्वारा विकसित की जाने वाली प्रौद्योगिकियों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उसके द्वारा निर्मित प्रणालियों की गुणवत्ता, विश्वसनीयता और सुरक्षा भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि गुणवत्ता केवल विनिर्माण की आवश्यकता नहीं है, बल्कि यह परिचालन विश्वसनीयता और राष्ट्रीय सुरक्षा का भी अनिवार्य हिस्सा है। श्री सिंह ने कहा कि मिसाइल, विमान, नौसैनिक प्लेटफॉर्म या अंतरिक्ष यान, प्रत्येक महत्वपूर्ण रक्षा प्रणाली का सटीक प्रदर्शन करना, कठिन परिस्थितियों में काम करना और उच्चतम स्तर की विश्वसनीयता बनाए रखना आवश्यक है। उन्होंने जोर दिया कि जैसे–जैसे देश की रक्षा प्रणालियां अधिक उन्नत हो रही हैं, वैसे–वैसे यह सुनिश्चित करना भी जरूरी है कि प्रत्येक महत्वपूर्ण सामग्री, कलपुर्जा, संयोजन और विनिर्माण प्रक्रिया गुणवत्ता तथा विश्वसनीयता के उच्चतम मानकों पर खरी उतरे।रक्षा क्षेत्र में नवाचार को



रेखांकित करते हुए श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि भारत आई–डेक्स और प्रौद्योगिकी विकास कोष (टीडीएफ) जैसी पहलों के माध्यम से रक्षा क्षेत्र में नवाचार की मजबूत संस्कृति को बढ़ावा दे रहा है। उन्होंने कहा कि प्रगतिशील नीतिगत सुधारों के सहयोग से ये प्रयास स्वदेशी प्रौद्योगिकी के विकास को गति दे रहे हैं और रक्षा के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में देश की क्षमताओं को मजबूत कर रहे हैं। मंत्री ने कहा कि अब केवल खामियों की पहचान करने की संस्कृति से आगे बढ़कर उन्हें रोकने की संस्कृति विकसित करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि भविष्य में स्थापित जांच तकनीकों को उन्नत डिजिटल प्रौद्योगिकियों के साथ जोड़ना महत्वपूर्ण होगा। इससे जांच प्रक्रियाएं अधिक सटीक, प्रभावी और उभरती औद्योगिक आवश्यकताओं के अनुरूप बन सकेंगी। श्री सिंह ने कहा कि गैर–विनाशकारी मूल्यांकन का क्षेत्र भी बड़े तकनीकी बदलाव के दौर से गुजर रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग, रोबोटिक्स, उन्नत सेंसर, डिजिटल ट्विन और पूर्वानुमान विश्लेषण जैसी प्रौद्योगिकियां जांच और संरचनात्मक स्वास्थ्य की निगरानी की संभावनाओं का विस्तार कर रही हैं।

शिक्षा मंत्री ने भारत–सिंगापुर के बीच नवाचार सहयोग बढ़ाने पर दिया जोर

नई दिल्ली, 15 नवम्बर।

शिक्षा मंत्री प्रल्हाद जोशी ने नवाचार को बढ़ावा देने और नए विचारों को व्यावहारिक समाधान में बदलने के लिए भारत और सिंगापुर के बीच अधिक सहयोग का आह्वान किया है। श्री जोशी ने आज सिंगापुर में चौथे सिंगापुर–भारत हैकाथॉन के उद्घाटन समारोह में यह बात कही। तीन दिन का यह हैकाथॉन 17 नवम्बर तक चलेगा। इसमें 120 युवा नवाचारकर्ता भाग ले रहे हैं। इनमें भारत और सिंगापुर के 60–60 विद्यार्थी शामिल हैं। ये विद्यार्थी दोनों देशों के प्रतिभागियों को मिलाकर बनाई गई 20 टीमों में काम करेंगे।

श्री जोशी ने प्रतिभागियों से सीमाओं से परे सोचने और नवाचार के माध्यम से समाधान तलाशने का आग्रह किया। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन और भारत इनोवेट्स जैसी पहलों के माध्यम से नवाचार के क्षेत्र में भारत की प्रगति का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि उपयोगी विचारों को वास्तविक जीवन की समस्याओं के समाधान में बदलने के लिए भारत और सिंगापुर के शैक्षणिक संस्थानों के बीच घनिष्ट सहयोग, निरंतर मार्गदर्शन और नवाचार के लिए अनुकूल वातावरण विकसित करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि दोनों देश बेहतर भविष्य के लिए युवाओं को मिलकर काम करने, नए विचार विकसित करने और समाधान तैयार करने के लिए सशक्त बनाने के प्रति वचनबद्ध हैं।

शिक्षा मंत्री ने सिंगापुर के और अधिक विश्वविद्यालयों को भारत में अपने परिसर स्थापित करने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने प्रस्तावित यूनिवर्सिटी टाउनशिप के विकास में सिंगापुर से सहयोग मांगा और इसके लिए नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर के यूनिवर्सिटी टाउन मॉडल का उल्लेख किया। उन्होंने 2027 में पांचवें भारत–सिंगापुर हैकाथॉन का आयोजन भारत में करने और दोनों देशों के उच्च शिक्षण संस्थानों का नियमित सम्मेलन आयोजित करने का भी प्रस्ताव रखा। इससे पहले, एक सोशल मीडिया पोस्ट में श्री जोशी ने कहा कि यह पहल दोनों देशों के बीच मजबूत होती व्यापक रणनीतिक साझेदारी और नवाचार तथा युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने की साझा प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

अपनी यात्रा के दौरान श्री जोशी ने सिंगापुर के शिक्षा मंत्री डेसमंड ली के साथ द्विपक्षीय बैठक भी की। दोनों मंत्रियों ने स्कूली और उच्च शिक्षा, कौशल विकास, अनुसंधान और नवाचार के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने के उपायों पर चर्चा की। उन्होंने शिक्षकों और विद्यार्थियों के आदान–प्रदान, शैक्षणिक योग्यताओं की पारस्परिक मान्यता, शिक्षा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के उपयोग, उभरती प्रौद्योगिकियों और उद्योग तथा शिक्षण संस्थानों के बीच साझेदारी जैसे विषयों पर भी विचार–विमर्श किया। श्री जोशी ने शिक्षा के क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग को आगे बढ़ाने के लिए श्री डेसमंड ली को भारत आने का निमंत्रण भी दिया।

औद्योगिक कचरे से निर्माण सामग्री बनाने के लिए भारत–नॉर्वे मिलकर विकसित करेंगे तकनीक

नई दिल्ली, 15 नवम्बर (हि.स.)।

भारत और नॉर्वे ने औद्योगिक कचरे को उपयोगी संसाधनों में बदलने और निर्माण क्षेत्र में इसके टिकाऊ इस्तेमाल के लिए संयुक्त तकनीक विकसित करने की संभावनाओं पर चर्चा की। इस दिशा में वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर), नॉर्वे की अनुसंधान संस्था सिन्टेफ और रिसर्च काउंसिल ऑफ नॉर्वे ने 10 नवंबर को नई दिल्ली स्थित इंडिया हैबिटेट सेंटर में 'वेस्ट टू रिसोर्स सॉल्यूशंस इन द सीमेंट एंड कंस्ट्रक्शन सेक्टर' विषय पर भारत–नॉर्वे संवाद आयोजित किया। इस संवाद में सीएसआईआर की विभिन्न प्रयोगशालाओं, सिन्टेफ, नियामक संस्थाओं और सीमेंट एवं निर्माण उद्योग के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इसका उद्देश्य कचरे के टिकाऊ प्रबंधन और उससे उपयोगी संसाधन तैयार करने के लिए दोनों देशों के बीच तकनीकी सहयोग की संभावनाएं तलाशना था। यह पहल भारत और नॉर्वे के बीच ग्रीन स्ट्रैटेजिक पार्टनरशिप के अनुरूप है, जिसे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की मई में नॉर्वे यात्रा के दौरान नई दिशा मिली थी। इस साझेदारी में सर्कुलर इकोनॉमी, स्वच्छ तकनीक और अनुसंधान को प्रमुख स्थान दिया गया है। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में सीएसआईआर मुख्यालय में आईएसटीएडी के प्रमुख डॉ. रमा स्वामी बंसल, नई दिल्ली स्थित रॉयल नॉर्वेजियन एम्बेसी के डॉ. अर्विन गडगिल, सिन्टेफ के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. कारे हेल्गे कार्स्टेंसन और सीएसआईआर–सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार सहित अन्य विशेषज्ञों ने विचार रखे। चर्चा में सीएसआईआर संस्थानों, सिन्टेफ और उद्योग जगत के सहयोग से संयुक्त तकनीकी प्रस्ताव तैयार करने तथा शोध के नतीजों को व्यावहारिक और बड़े स्तर पर इस्तेमाल योग्य समाधानों में बदलने पर जोर दिया गया। प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने रैखिक अर्थव्यवस्था से चक्रीय अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ने की आवश्यकता बताई। उन्होंने निर्माण और औद्योगिक कचरे को उपयोगी संसाधनों में बदलने पर जोर दिया। इस दौरान निर्माण एवं विध्वंस कचरे (सीएंडडी वेस्ट), स्टील स्लैग, फ्लाई ऐश, रेड मड और अन्य औद्योगिक अवशेषों के संभावित उपयोग पर चर्चा हुई। इनके प्रसंस्करण की तकनीक, मानकीकरण, आर्थिक व्यवहार्यता और बाजार में स्वीकार्यता जैसी चुनौतियों पर भी विचार किया गया।

बंगाल की खाड़ी में बना अवदाब 17 नवंबर तक भीषण चक्रवाती तूफान में हो सकता है तब्दील

नई दिल्ली, 15 नवम्बर।

दक्षिण–पूर्वी और उससे सटे दक्षिण–पश्चिमी बंगाल की खाड़ी के ऊपर बना अवदाब 17 नवंबर तक भीषण चक्रवाती तूफान में बदल सकता है। मौसम विभाग ने रविवार को यह जानकारी दी। विभाग के अनुसार, तमिलनाडु के उत्तरी तटीय जिलों, पुडुचेरी और कराईकल क्षेत्र में बारिश होने का अनुमान है। मौसम विभाग की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक, शनिवार को दक्षिण–पूर्वी बंगाल की खाड़ी के ऊपर बना अवदाब क्षेत्र उत्तर–पश्चिम दिशा में आगे बढ़ा और गहरे दबाव में बदल गया। विभाग ने बताया कि यह रविवार सुबह 5:30 बजे एक निश्चित स्थान पर केंद्रित था। मौसम विभाग के मुताबिक, इसके उत्तर–पश्चिम दिशा में आगे बढ़ने और और अधिक शक्तिशाली होने की आशंका है। आईएमडी ने बताया कि इसके 16 नवंबर को दक्षिणी बंगाल की खाड़ी के मध्य



और उससे सटे पश्चिम–मध्य हिस्से में चक्रवाती तूफान तथा 17 नवंबर को भीषण चक्रवाती तूफान में बदलने का अनुमान है। मौसम विभाग के मुताबिक, तमिलनाडु के उत्तरी जिलों के अलावा सोमवार से राज्य के पश्चिमी घाट और दक्षिणी जिलों में कुछ स्थानों पर मध्यम बारिश होने का अनुमान है। बुलेटिन के अनुसार, रविवार सुबह 8:30 बजे समाप्त हुए पिछले 24 घंटों के दौरान चेंगलपट्टू, चेन्नई, कांचीपुरम और कन्याकुमारी सहित राज्य के कई जिलों में बारिश हुई। (भाषा)

स्वास्थ्य पर सरकारी खर्च तीन गुना बढ़ा, इलाज पर लोगों की जेब से होने वाला खर्च घटा

नई दिल्ली, 15 नवम्बर।

देश में स्वास्थ्य सेवाओं को अधिक सुलभ और किफायती बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। सरकार की ओर से स्वास्थ्य क्षेत्र पर किए जा रहे निवेश में लगातार बढ़ोतरी हुई है। इसका असर आम लोगों के स्वास्थ्य पर होने वाले खर्च में भी दिखाई दे रहा है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य लेखा यानी नेशनल हेल्थ अकाउंट्स 2023–24 के ताजा आंकड़ों के मुताबिक, स्वास्थ्य पर कुल सरकारी खर्च पिछले एक दशक में तीन गुना से अधिक बढ़कर एक लाख 30 हजार करोड़ रुपये से बढ़कर 4 लाख 14 हजार करोड़ रुपये हो गया है।

इसका सबसे सकारात्मक पहलू यह है कि इलाज के लिए लोगों को अपनी जेब से खर्च होने वाली रकम के अनुपात में बड़ी कमी आई है। वर्ष 2013–14 में कुल स्वास्थ्य खर्च में लोगों की जेब से होने वाले खर्च की हिस्सेदारी 64.2 प्रतिशत थी, जो 2023–24 में घटकर 42.7 प्रतिशत रह गई है। यानी एक दशक में इसमें 21.5 प्रतिशत अंकों की कमी दर्ज की गई है।

प्रति व्यक्ति सरकारी स्वास्थ्य खर्च में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। यह 1,042 रुपये से बढ़कर 2,959 रुपये हो गया है। वहीं, स्वास्थ्य पर सामाजिक सुरक्षा खर्च की हिस्सेदारी 6 प्रतिशत से बढ़कर 11 प्रतिशत पहुंच गई है, जो आम लोगों को इलाज के आर्थिक बोझ से राहत देने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

सरकार का जोर केवल बड़े अस्पतालों और गंभीर बीमारियों के इलाज तक सीमित नहीं है, बल्कि प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं को भी मजबूत किया जा रहा है। प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं पर सरकारी निवेश बढ़कर 1 लाख 53 हजार करोड़ रुपये पहुंच गया है।

आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना, मुत दवा और जांच की सुविधा, प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि परियोजना और आयुष्मान आरोग्य मंदिर जैसी पहल इस दिशा में अहम भूमिका निभा रही हैं। कुल मिलाकर, राष्ट्रीय स्वास्थ्य लेखा के ये आंकड़े बताते हैं कि स्वास्थ्य क्षेत्र में सरकारी निवेश बढ़ने के साथ ही आम नागरिकों पर इलाज के आर्थिक बोझ को कम करने की दिशा में भी प्रगति हुई है। यह हर नागरिक तक सुलभ, किफायती और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने के लक्ष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

छठ महापर्व : सूर्य उपासना, आध्यात्म, लोक आस्था और प्रकृति संरक्षण का अनूठा संगम

जब भौतिकता की अंधी दौड़ में दुनिया अपनी जड़ों से दूर होती जा रही है, तब कार्तिक मास में छठ के सजे घाट भारतीय संस्कृति और लोक आस्था की मजबूती का अहसास कराते हैं। यह अनूठा महापर्व इंसान को मंदिरों की चारदीवारी से निकालकर सीधे प्रकृति की गोद में ले जाता है, जहां सूर्य प्रत्यक्ष देवता, नदियां पावन तीर्थ और प्रकृति पूजा का आधार बन जाती है। बांस के सूप और दउरा में सजे फल, ठेकुआ, गन्ने और अन्य प्रसाद प्रकृति के प्रति कृतज्ञता का प्रतीक हैं। डूबते और उगते, दोनों सूर्य को अर्घ्य देने की परंपरा जीवन के हर पड़ाव के सम्मान और संतुलन का संदेश देती है। छठ केवल सूर्य उपासना नहीं, बल्कि आध्यात्म, इतिहास, लोक संस्कृति और सामाजिक समरसता का जीवंत उत्सव है। बिहार, झारखंड, पूर्वी उत्तर प्रदेश और नेपाल के तराई क्षेत्रों से शुरू हुई इसकी परंपरा आज देश–दुनिया तक पहुंच चुकी है। रोजगार और शिक्षा के लिए महानगरों में रहने वाले लोग भी अपनी मिट्टी और संस्कृति से जुड़ने के लिए इस अवसर पर घर लौटते हैं। लोकगीतों की मिठास, लगभग 36 घंटे के निर्जला व्रत की कठिन तपस्या और जाति–वर्ग के भेद से ऊपर उठकर एक घाट पर जुटने वाले श्रद्धालु इस पर्व को विशिष्ट बनाते हैं। प्रकृति, परिवार और समाज के प्रति कृतज्ञता का यह महापर्व प्रेम, पवित्रता, अनुशासन और पर्यावरण संरक्षण का शाश्वत संदेश देता है।

वैदिक परंपरा और पौराणिक मान्यताओं से जुड़ी सूर्य उपासना

छठ महापर्व की जड़ें भारतीय सभ्यता की प्राचीन सूर्योपासना परंपरा में हैं। ऋग्वेद में सूर्य, सविता, मित्र और पूषा जैसे सौर देवताओं की स्तुति मिलती है। वैदिक चिंतन में सूर्य को प्रकाश, ऊर्जा, आरोग्य और जीवन का आधार माना गया है। कृषि, वनस्पति, जलचक्र और जीव–जगत सूर्य की ऊर्जा पर निर्भर हैं। इसलिए प्राचीन भारतीय समाज में सूर्य को जीवनदाता के रूप में विशेष सम्मान मिला। छठ की परंपराओं को रामायण और महाभारत की कथाओं से भी जोड़ा जाता है। लोकमान्यता है कि लंका विजय के बाद भगवान राम और माता सीता ने अयोध्या लौटकर कार्तिक शुक्ल षष्ठी को सूर्य की उपासना की थी। एक अन्य मान्यता के अनुसार, माता सीता ने मुंगेर में गंगा तट पर छठ व्रत किया था। महाभारत में सूर्यपुत्र कर्ण को परम सूर्य उपासक बताया गया है। मान्यता है कि वे प्रतिदिन नदी में खड़े होकर सूर्य को अर्घ्य देते और जरूरतमंदों को दान करते थे। द्रौपदी की सूर्य आराधना की कथा भी प्रचलित है। ये धार्मिक–पौराणिक प्रसंग भारतीय जनमानस में सूर्य उपासना की प्राचीनता और गहरी आस्था दर्शाते हैं।

छठी मैया की पूजा और लोकविश्वास

छठ महापर्व में सूर्यदेव के साथ छठी मैया की पूजा का भी विशेष महत्व है। लोकविश्वास में उन्हें संतान की रक्षक, बच्चों को दीर्घायु देने वाली और परिवार को सुख–समृद्धि प्रदान करने वाली देवी माना जाता है। कुछ धार्मिक मान्यताओं में छठी मैया को सूर्यदेव की बहन और प्रकृति का स्वरूप बताया गया है। उनकी उत्पत्ति और स्वरूप को लेकर अलग–अलग क्षेत्रों में कई लोक कथाएं प्रचलित हैं। संतान प्राप्ति, बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य, परिवार की सुख–शांति और समाज के कल्याण की कामना से स्त्री–पुरुष दोनों यह कठिन व्रत करते हैं। इस पर्व की खासियत है कि पूजा के लिए भव्य मंदिर या पुरोहित अनिवार्य नहीं हैं। नदी, तालाब, पोखर या अन्य जलाशयों के किनारे व्रती सीधे सूर्यदेव को अर्घ्य देकर प्रार्थना करते हैं। इस तरह छठ भक्त और प्र.ति के बीच सीधा संबंध स्थापित करता है।

चार दिनों की कठिन साधना और अनुष्ठान

छठ महापर्व चार दिनों का अनुशासन, पवित्रता और तपस्या से जुड़ा अनुष्ठान है। इसकी शुरुआत कार्तिक शुक्ल चतुर्थी को नहाय–खाय से होती है। व्रती स्नान कर घर और पूजा स्थल साफ करते हैं। भोजन में कद्दू की सब्जी, चने की दाल और अरवा चावल जैसे सात्विक व्यंजन बनते हैं। अनाज की सफाई, धुलाई, सुखाने और पीसने तक शुद्धता का ध्यान रखा जाता है। दूसरे दिन कार्तिक शुक्ल पंचमी को खरना होता है। व्रती दिनभर उपवास रखते हैं और शाम को मिट्टी के चूल्हे पर गुड़ की खीर तथा रोटी का प्रसाद बनाते हैं। सूर्यदेव को भोग लगाने के बाद प्रसाद ग्रहण करते हैं। इसके बाद लगभग 36 घंटे का निर्जला व्रत शुरू होता है। इस दौरान अन्न–जल त्यागकर व्रती जमीन पर सोते और नियमों का पालन करते हैं। तीसरे दिन षष्ठी को संध्या कालीन अर्घ्य दिया जाता है। व्रती परिवार और श्रद्धालुओं के साथ नदी, तालाब या अन्य जलाशयों पर पहुंचते हैं। बांस के सूप और दउरा में ठेकुआ, कसार, नारियल, केला, गन्ना, डाभ नींबू और मौसमी फल सजाए जाते हैं। जल में खड़े होकर अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य देते हैं। दीपों, पारंपरिक गीतों और सामूहिक प्रार्थनाओं से घाटों पर भक्तिमय वातावरण बनता है। चौथे दिन कार्तिक शुक्ल सप्तमी की सुबह उदीयमान सूर्य को अर्घ्य देकर व्रत पूरा होता है। व्रती पारण कर प्रसाद परिवार, पड़ोसियों और परिचितों में बांटते हैं। यह साधना संकल्प, धैर्य, आत्मसंयम और आस्था का उदाहरण है।

डूबते सूर्य की पूजा का आध्यात्मिक संदेश

छठ महापर्व की अनूठी विशेषता अस्ताचलगामी सूर्य की उपासना है। आमतौर पर उगते सूर्य को सफलता और नई शुरुआत का प्रतीक माना जाता है, लेकिन छठ डूबते सूर्य के प्रति भी सम्मान और कृतज्ञता का भाव सिखाता है। जीवन में सफलता–असफलता, उपलब्धि–संघर्ष और उन्नति–अवसान सभी आते हैं। इन्हें सहजता से स्वीकार करना ही जीवन का संतुलन है। डूबते सूर्य को अर्घ्य देना बीते समय और उसकी उपलब्धियों के प्रति आभार का प्रतीक है, जबकि अगली सुबह उगते सूर्य की पूजा नई उम्मीद, ऊर्जा और विश्वास जगाती है। यह पर्व परिवर्तन और प्रकृति के चक्र को स्वीकारने तथा अहंकार के बजाय विनम्रता अपनाने का संदेश देता है।

लोक संस्कृति, सामाजिक समरसता और आर्थिक महत्व

छठ बिहार और पूर्वांचल की लोक संस्कृति का सशक्त प्रतीक है। इसके लोकगीतों में परिवार, संतान, प्रकृति, नदियों, सूर्यदेव और छठी मैया के प्रति श्रद्धा झलकती है। 'कांच ही बांस के बहंगिया, बहंगी लचकत जाए' और 'उगा हो सुरुज देव' जैसे पारंपरिक गीत पर्व की भावनाओं को जीवंत करते हैं। लोक गायिका शारदा सिन्हा ने अपने मधुर स्वरों से इन गीतों को देश–दुनिया में लोकप्रिय बनाया। इनमें मिथिला, भोजपुर, मगध और अंग क्षेत्र की सांस्कृतिक विविधता दिखाई देती है। सामाजिक समरसता भी छठ की बड़ी विशेषता है। घाटों पर जाति, वर्ग और आर्थिक हैसियत का भेद मिट जाता है। सभी समुदायों के लोग सफाई, सजावट और व्यवस्था में मिलकर सहयोग करते हैं। कोई पूजा सामग्री जुटाता है, कोई प्रसाद बनाने में मदद करता है, तो कोई व्रतियों की सुविधा का ध्यान रखता है। अर्घ्य के समय परिवार, पड़ोसी और परिचित भी सूप में प्रसाद अर्पित करते हैं। यह सामूहिक भागीदारी भाईचारे और एकता को मजबूत करती है। छठ स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी गति देता है। बांस के सूप, दउरा और टोकरी बनाने वाले कारीगरों, मिट्टी के चूल्हे–बर्तन तैयार करने वाले कुम्हारों, किसानों, फल विक्रेताओं और छोटे कारोबारियों को रोजगार मिलता है। इस तरह यह पर्व धार्मिक आस्था के साथ पारंपरिक शिल्प, स्थानीय उत्पादों और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी प्रोत्साहित करता है।

प्रकृति संरक्षण और पर्यावरण संतुलन का संदेश

छठ महापर्व का प्रकृति से गहरा जुड़ाव इसके हर अनुष्ठान में दिखाई देता है। सूर्य, जल, मिट्टी, वनस्पति और कृषि उपज इसकी पूजा के अभिन्न अंग हैं। बांस के सूप–दउरा, मिट्टी के चूल्हे तथा मौसमी फलों का उपयोग प्रकृति के साथ सामंजस्य का संदेश देता है। गन्ना, नारियल, केला, अदरक, हल्दी और अन्य कृषि उत्पादों के माध्यम से प्रकृति के प्रति आभार व्यक्त किया जाता है। पर्व की तैयारी में नदी, तालाब और घाटों की सफाई पर्यावरण संरक्षण की सीख देती है। जलाशयों को सालभर स्वच्छ रखना, प्लास्टिक, रासायनिक कचरे और पूजा सामग्री को जल में डालने से बचना तथा कृत्रिम सजावट के बजाय पर्यावरण अनुकूल विकल्प अपनाना हमारी धार्मिक और सामाजिक जिम्मेदारी है।

आस्था से आगे जीवन का संदेश

छठ महापर्व भारतीय संस्कृति का अनूठा उत्सव है, जिसमें धर्म, अध्यात्म, इतिहास, लोकपरंपरा, सामाजिक समरसता और प्रकृति संरक्षण का संगम दिखाई देता है। यह पर्व सिखाता है कि सच्ची श्रद्धा के लिए आडंबर नहीं, बल्कि स्वच्छ मन, अनुशासन और समर्पण जरूरी है। डूबते और उगते सूर्य की पूजा जीवन के हर दौर का सम्मान करना सिखाती है, जबकि सामूहिक भागीदारी सामाजिक एकता और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी जगाती है। छठ प्रकृति के साथ संतुलन, संयम और सामूहिकता से जीवन जीने की भारतीय परंपरा का जीवंत उदाहरण है।

न्यूजीलैंड ने भारत को चौथे ODI मैच में 244 रनों से दी शिकस्त

नई दिल्ली, 15 नवम्बर।

न्यूजीलैंड ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए चौथे वनडे मुकाबले में टीम इंडिया को 244 रनों के विशाल अंतर से हरा दिया है। न्यूजीलैंड से मिले 334 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए भारत की पूरी टीम मात्र 26.4 ओवर में 89 रन बनाकर ऑलआउट हो गई। लक्ष्य का पीछा करने उतरी भारतीय टीम की शुरुआत बेहद खराब रही। मैट हेनरी ने पारी के पहले ही ओवर में रोहित शर्मा, विराट कोहली और कप्तान श्रेयस अय्यर को बिना खाता खोले पवेलियन भेजा। इसके बाद ऋतुराज गायकवाड़ भी बल्ले से कुछ खास कमाल नहीं दिखा सके और वह 5 रन बनाकर आउट हुए।

9 के स्कोर पर 4 विकेट गंवाने के बाद भारतीय पारी को ईशान किशन और अक्षर पटेल ने थोड़ी देर तक संभालने का प्रयास किया। हालांकि, ईशान 53 गेंदों का सामना करने के बाद 27 रन बनाकर आउट हुए। वहीं, अक्षर 36 गेंदों में 21 रन बनाने के बाद मैथ्यू फिशर का शिकार बने।

आकिब नबी और कुलदीप यादव भी सस्ते में आउट हुए। नमन धीर 24 गेंदों में 21 रन बनाने के बाद मैथ्यू फिशर का शिकार बने। गुरनूर बरार 2 रन ही बना सके। न्यूजीलैंड की ओर से गेंदबाजी में मैट हेनरी ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए 9.4 ओवर में महज 27 रन देकर 6 विकेट लिए। वहीं, मैथ्यू फिशर ने 3 विकेट अपने नाम किए।



इससे पहले, न्यूजीलैंड की टीम 50 ओवर में 333 रन बनाकर ऑलआउट हुई। मेजबानों की तरफ से विल यंग ने शानदार बल्लेबाजी करते हुए 108 गेंदों में 125 रनों की दमदार पारी खेली। वहीं, टिम सीफर्ट ने 58 रनों का योगदान दिया। दोनों ने मिलकर पहले विकेट के लिए 85 रनों की साझेदारी निभाई। निक केली (4 रन) और डीन फॉक्सक्रॉट (8 रन) बल्ले से कुछ खास कमाल नहीं दिखा सके। फिन एलन ने 30 गेंदों में 41 रनों का योगदान दिया। अंत के ओवरों में मिचेल सैंटनर ने 24 और क्रिस्टियन क्लार्क ने 22 रनों की अहम पारी खेली। वहीं, काइल जेमिसन 19 रन बनाकर नाबाद रहे। भारत की तरफ से गेंदबाजी में आकिब नबी, गुरनूर बरार और अक्षर पटेल ने दो–दो विकेट चटकाए। अर्शदीप और नमन धीर ने एक–एक विकेट लिया। (इनपुट–आईएएनएस)

केंद्रीय विद्यालयों की व्यवस्था होगी और डिजिटल, शुरू हुई तीन नई पहल

नई दिल्ली, 15 नवम्बर।

केंद्रीय विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के माता–पिता अब घर बैठे अपने बच्चों की उपस्थिति, पढ़ाई की प्रगति और परीक्षा परिणाम की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। इतना ही नहीं, वे छुट्टी के लिए आवेदन करने से लेकर जरूरी प्रमाणपत्र बनवाने तक का काम भी ऑनलाइन कर सकेंगे। केंद्रीय विद्यालय संगठन ने शिक्षा व्यवस्था को तकनीक से जोड़ने और स्कूलों से जुड़ी सेवाओं को आसान बनाने के लिए तीन नई डिजिटल पहल शुरू की हैं।

केंद्रीय शिक्षा मंत्री प्रल्हाद जोशी ने 12 नवंबर को नई दिल्ली में इन तीनों पहलों का शुभारंभ किया। इनमें एआई से जुड़ा विद्या समीक्षा केंद्र, 'केवीएस संवाद' अभिभावक संपर्क ऐप एवं वेब पोर्टल और पूर्व विद्यार्थियों के लिए केंद्रीय विद्यालय पूर्व छात्र पोर्टल शामिल हैं। इन पहलों का उद्देश्य विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों और स्कूल प्रशासन के बीच संपर्क को बेहतर बनाना है। साथ ही, स्कूलों से जुड़ी जानकारियों और जरूरी सेवाओं को एक ही डिजिटल मंच पर उपलब्ध कराना है।

विद्या समीक्षा केंद्र और 'समीक्षा' एआई बॉट के जरिये अब स्कूलों की गतिविधियों और विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति पर लगातार नजर रखी जा सकेगी। यह केंद्र विद्यार्थियों और कर्मचारियों की उपस्थिति, पढ़ाई के प्रदर्शन, स्कूलों में उपलब्ध सुविधाओं और दाखिले से जुड़ी जानकारी के वास्तविक समय के आंकड़े उपलब्ध कराएगा। वहीं, इसमें शामिल 'समीक्षा' एआई बॉट इन आंकड़ों का विश्लेषण कर कमियों की पहचान करेगा और उनमें सुधार के लिए जरूरी सुझाव देगा। इससे शिक्षा से जुड़े अधिकारी समय पर सही फैसले ले सकेंगे और स्कूलों की जरूरतों के अनुसार कदम उठा सकेंगे।

दूसरी पहल 'केवीएस संवाद' ऐप और वेब पोर्टल है, जिसे खास तौर पर अभिभावकों की सुविधा को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। इसके माध्यम से माता–पिता अपने बच्चों की रोजाना की उपस्थिति, पाठ्यक्रम की प्रगति, परीक्षा परिणाम और पढ़ाई से जुड़ी सामग्री देख सकेंगे। विद्यार्थियों के डिजिटल पहचान पत्र भी इस प्लेटफार्म पर उपलब्ध होंगे। अभिभावक यहां बोनाफाइड और बाल शिक्षा भत्ता प्रमाणपत्र के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकेंगे। इसके अलावा बच्चों की छुट्टी के लिए आवेदन करने और विद्यार्थी व शिक्षक की डायरी देखने की सुविधा भी मिलेगी। इससे छोटे–छोटे कामों के लिए बार–बार स्कूल जाने और कागजी कार्रवाई की जरूरत कम होगी। साथ ही अभिभावकों और शिक्षकों के बीच संवाद भी बेहतर होगा।

तीसरी पहल केंद्रीय विद्यालय पूर्व छात्र पोर्टल है। इसके माध्यम से केंद्रीय विद्यालयों से पढ़ाई पूरी कर चुके विद्यार्थी अपने पुराने स्कूलों और सहपाठियों से दोबारा जुड़ सकेंगे। वे अपनी उपलब्धियों और अनुभवों को साझा करने के साथ मौजूदा विद्यार्थियों को मार्गदर्शन देने, करियर संबंधी सलाह देने और स्कूलों के विकास में योगदान करने में भी भूमिका निभा सकेंगे। तीनों डिजिटल मंच केंद्रीय विद्यालय संगठन के मुख्यालय के सूचना प्रौद्योगिकी सेवा प्रकोष्ठ ने आंतरिक रूप से विकसित किए हैं। केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री प्रल्हाद जोशी ने इन पहलों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों और डिजिटल इंडिया की परिकल्पना को आगे बढ़ाने वाला कदम बताया।

उन्होंने केंद्रीय विद्यालय संगठन को बधाई देते हुए कहा कि इन सुविधाओं का विस्तार देश के सभी केंद्रीय विद्यालयों, सभी कक्षाओं और सभी स्थानों तक किया जाना चाहिए। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि इन पहलों का लाभ केवल केंद्रीय विद्यालयों तक सीमित न रहे, बल्कि स्कूली शिक्षा व्यवस्था से जुड़े अन्य विद्यार्थियों तक भी पहुंचे। इसके लिए स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग के साथ मिलकर काम करने पर जोर दिया। शिक्षकों के प्रशिक्षण को लेकर भी उन्होंने एक अहम सुझाव दिया।

उन्होंने कहा कि डिजिटल पोर्टल पर शिक्षकों के प्रशिक्षण से जुड़ी पूरी जानकारी शामिल की जानी चाहिए। इसमें यह दर्ज हो कि किस शिक्षक ने कब प्रशिक्षण लिया, प्रशिक्षण कितने अंतराल पर हुआ, पहले कौन–कौन से प्रशिक्षण पूरे किए गए और आगे किन प्रशिक्षणों की जरूरत है। इससे शिक्षकों के प्रशिक्षण की निगरानी आसान होगी और उन्हें समय पर जरूरी प्रशिक्षण दिया जा सकेगा। शिक्षा मंत्री ने इन डिजिटल पहलों के लगातार आकलन और उनमें सुधार की जरूरत पर भी जोर दिया, ताकि तकनीक का लाभ अधिक से अधिक विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों तक पहुंच सके। (इनपुट–आईएएनएस)

नीति आयोग प्रधानमंत्री मोदी के 25 वर्षों के शासन अनुभव को दर्ज करने के लिए 5 कार्यशालाओं की एक श्रृंखला शुरू करेगा

नई दिल्ली, 15 नवम्बर।

नीति आयोग 17 नवंबर 2026 को पांच राष्ट्रीय कार्यशालाओं की एक श्रृंखला शुरू करेगा। इसका उद्देश्य प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के शासन प्रमुख के रूप में 25 वर्षों के अनुभव से सीख लेना है। इस श्रृंखला में सार्वजनिक नेतृत्व के इस 25 वर्ष के सफर का अध्ययन किया जाएगा, ताकि इससे मिली सीख देश के साझा ज्ञान का हिस्सा बन सके। इस दौरान इस यात्रा का हिस्सा रहे लोगों के अनुभवों का दस्तावेजीकरण किया जाएगा और उन्हें ऐसे ज्ञान में परिवर्तित किया जाएगा, जिससे सभी को लाभ मिल सके। नीति आयोग ने आज रविवार को एक बयान जारी कर इसकी जानकारी दी है।

श्री नरेन्द्र मोदी ने 7 अक्टूबर 2001 को गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में पदभार संभाला था

श्री नरेन्द्र मोदी ने 7 अक्टूबर 2001 को गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में पदभार संभाला था। इस पद पर 12 वर्षों से अधिक समय तक सेवा देने के बाद उन्होंने मई 2014 में देश के प्रधानमंत्री के रूप में पदभार ग्रहण किया और वर्तमान में लगातार तीसरी बार इस पद पर कार्यरत हैं। 7 अक्टूबर 2026 को 25 वर्ष पूरे होने के साथ यह भारत में किसी निर्वाचित सरकार के प्रमुख के रूप में सबसे लंबे निरंतर कार्यकाल का रिकॉर्ड है। इस पूरी अवधि में शासन व्यवस्था का आधार 'प्रधान सेवक' की अवधारणा रही है। इसके अंतर्गत सरकार का प्रत्येक पद नागरिकों की सेवा के लिए अस्तित्व में है। अंत्योदय ने प्रगति का पैमाना समाज के अंतिम व्यक्ति के कल्याण को बनाया है। जनभागीदारी ने विकास को जन आंदोलन का रूप दिया है। 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास' के सिद्धांत ने इसे एक साझा राष्ट्रीय प्रयास के रूप में और मजबूत किया है। वर्ष 2047 तक विकसित भारत का लक्ष्य इस दृष्टिकोण को दीर्घकालिक दिशा प्रदान करता है और प्रत्येक संस्थान से स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष के करीब पहुंचते देश के लिए योजना बनाने और कार्य करने की अपेक्षा करता है।

यह कार्यशाला श्रृंखला पीएम मोदी के प्रत्यक्ष अनुभवों को दर्ज करेगी

इस स्तर पर शासन संचालन के संबंध में देश ने जो कुछ सीखा है, उसका अधिकांश हिस्सा उन अधिकारियों, संस्थानों और नागरिकों के अनुभवों में निहित है, जिन्होंने इन निर्णयों को लागू किया। यह कार्यशाला श्रृंखला उनके प्रत्यक्ष अनुभवों को दर्ज करेगी और अकादमिक मानकों के आधार पर उनका विश्लेषण करेगी। इन अनुभवों को सिविल सेवकों, प्रशिक्षण संस्थानों, विश्वविद्यालयों, विद्यार्थियों और आम जनता के लिए केस स्टडी, शोध पत्रों तथा शिक्षण सामग्री सहित संस्थागत शिक्षण सामग्री के रूप में विकसित किया जाएगा।

निम्नलिखित शासन संबंधी विषयों पर केंद्रित होंगी 5 राष्ट्रीय कार्यशालाएं

आपको बता दें, पांच राष्ट्रीय कार्यशालाएं निम्नलिखित शासन संबंधी विषयों पर केंद्रित होंगीः 'मिशन के रूप में नेतृत्व' – नवंबर 2026, 'सेवा वितरण के रूप में शासन' – जनवरी 2027, 'समावेशन के रूप में विकास' – अप्रैल 2027, 'सभ्यतागत पहचान' – जुलाई 2027, 'वैश्विक शक्ति के रूप में भारत' – सितंबर 2027

पहली राष्ट्रीय कार्यशाला 'मिशन के रूप में नेतृत्व' 17 नवंबर 2026 को नई दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित की जाएगी। इसमें उन विशिष्ट निर्णयों के माध्यम से नेतृत्व का अध्ययन किया जाएगा, जिनमें नेतृत्व स्पष्ट रूप से दिखाई देता है और यह भी देखा जाएगा कि इन निर्णयों को नागरिकों के लिए परिणामों में किस प्रकार बदला जाता है। नीति आयोग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अनुराग जैन प्रतिभागियों का स्वागत करेंगे और नीति आयोग के उपाध्यक्ष अशोक कुमार लाहिड़ी उद्घाटन संबोधन देंगे। प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव डॉ. पी.के. मिश्रा उद्घाटन मुख्य भाषण देंगे और कोटक महिंद्रा बैंक के संस्थापक उदय कोटक भी मुख्य भाषण देंगे। नीति आयोग के सदस्य डॉ. आर. बालासुब्रमण्यम कार्यशाला की रूपरेखा प्रस्तुत करेंगे।

सीधे तौर पर शामिल रहे लोगों के चार प्रत्यक्ष अनुभव इस कार्यक्रम का मुख्य हिस्सा होंगे

महत्वपूर्ण निर्णयों में सीधे तौर पर शामिल रहे लोगों के चार प्रत्यक्ष अनुभव इस कार्यक्रम का मुख्य हिस्सा होंगे। गुजरात सरकार के अपर मुख्य सचिव राजीव टोपनो वर्ष 2001 के भूकंप के बाद कच्छ के पुनर्निर्माण पर अपने अनुभव साझा करेंगे। पूर्व केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव और यूपीएससी के पूर्व अध्यक्ष प्रीति सूदन कोविड–19 के दौरान की गई कार्रवाई पर अपने अनुभव साझा करेंगी। ग्रामीण विकास मंत्रालय के पूर्व सचिव शैलेश कुमार सिंह 'लखपति दीदी' योजना पर अपने अनुभव प्रस्तुत करेंगे। वहीं इसरो के पूर्व अध्यक्ष डॉ. एस. सोमनाथ अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था को खोलने से जुड़े अपने अनुभव साझा करेंगे।

'विकसित भारत के लिए नेतृत्व' विषय पर एक पैनल चर्चा आयोजित की जाएगी। इसका संचालन नीति आयोग के पूर्व मुख्य कार्यकारी अधिकारी बी.वी.आर. सुब्रह्मण्यम करेंगे। पैनल में उत्तर प्रदेश सरकार के शहरी विकास और ऊर्जा मंत्री अरविंद कुमार शर्मा, भारतीय प्रबंधन संस्थान अहमदाबाद के प्रोफेसर विशाल गुप्ता, नीति आयोग की प्रतिष्ठित फेलो देबजानी घोष और हरदोई की संयुक्त मजिस्ट्रेट नारायणी भाटिया शामिल होंगी। कैबिनेट सचिव डॉ. टी.वी. सोमनाथन कार्यशाला का समापन करेंगे और आईजीओटी कर्मयोगी प्लेटफॉर्म पर 'कर्मयोगी संकल्प' की शुरुआत करेंगे। इस संकल्प के माध्यम से देशभर के सिविल सेवक अपने नेतृत्व संबंधी कार्यप्रणाली में एक विशिष्ट बदलाव लाने की प्रतिबद्धता व्यक्त करेंगे।

900 प्रतिभागियों के शामिल होने की उम्मीद

इस कार्यशाला में लगभग 900 प्रतिभागियों के शामिल होने की उम्मीद है। इनमें से 250 प्रतिभागी विचार–विमर्श में शामिल होंगे। इनमें केंद्र और राज्य सरकारों के सचिवों और वरिष्ठ अधिकारियों तथा आकांक्षी जिलों के जिला कलेक्टरों सहित 150 सरकारी अधिकारी शामिल होंगे। प्रतिभागियों में प्रमुख संस्थानों और विश्वविद्यालयों के 25 विद्यार्थी तथा राष्ट्रीय प्रमुख योजनाओं के 50 सामुदायिक भागीदार और लाभार्थी भी शामिल होंगे। समूह चर्चाओं का संचालन क्षमता निर्माण आयोग की 'अमृत ज्ञान कोष' पहल के अंतर्गत प्रशिक्षित 25 केस फैसिलिटेटर करेंगे। इस कार्यक्रम की कार्यवाही का प्रसारण आईजीओटी कर्मयोगी प्लेटफॉर्म पर किया जाएगा।